मराठी से हिंदी में अनुदित काव्यकृति 'आधा आसमाँ सिर पर' का अनुवाद परक मूल्यांकन

(A Translation Based Evaluation Of The Poetry Anthology 'Aadha Aasman Sir Par' Which Has Been Translated From Marathi To Hindi)

एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

सत्र- 2016-17

शोध निर्देशक

डॉ. हरप्रीत कौर

सहायक प्रोफ़ेसर

अनुवाद अध्ययन विभाग

शोधार्थी

वर्षा उभाले

अनुवाद विभाग

नामांकन सं.- 2016/04/002/219

अनुवाद अध्ययन विभाग

अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा

संसद द्वारा अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय

पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय गाँधी हिल्स,वर्धा-442001 (महाराष्ट्र) भारत

बेबसाईट www.hindivishw.org .

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय : अनुवाद मूल्यांकन अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

1.1. अनुवाद मूल्यांकन अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप

1.2. काव्य का अनुवाद मूल्यांकन अर्थ एंव स्वरूप

द्वितीय अध्याय: कवि,अनुवादक और काव्यकृति का परिचय

2.1 कवि श्रीधर पवार और अनुवादक गोपाल नायडू का परिचय

2.2 'आधा आसमाँ सिर पर' काव्य कृति की विषयवस्तु

तृतीय अध्याय :'आधा आसमाँ सिर पर' का अनुवाद परक मूल्यांकन

3.1 शब्द, वाक्य और अर्थ के स्तर पर अनूदित कृति का मूल्यांकन

3.2 शीर्षक के स्तर पर अनूदित कृति का मूल्यांकन

निष्कर्ष : 'आधा आसमाँ सिर पर' का मूल्यांकन निष्कर्ष

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूचि

परिशिष्ट :कवि श्रीधर पवार और अनुकादक गोपाल नायडू का साक्षात्कार

Research summery

Present research is an effort evaluating the Marathi-hindi translate text ‘aadhaasman sir par’ No doubt it’s a difficult task to evaluate the translation of any translated creation, keeping it aside, we have tried to evaluate the translation in the proposed research. Evaluation is a difficult task because writer translator and evaluator all have their different approaches towards the same creation, but at the very point, they are linked up with it too, that’s why translator and evaluator both are concerned with the source text. In this situation, we will underline those point which we find out in this research.

The research is categorized into three chapters.

The first chapter includes the following matter.

1. Evaluation of translation: meaning, definition and nature.

2. Evaluation of poetic translation: meaning and nature.

In which we tried to find out that what is evaluation of translation? And which kind of nature it has? To evaluate any translated creation it is necessary to know about the nature of evaluation that’s why we have decided to devide this chapter into two sub chapters. The first sub chapter represents the meaning, definition and nature of translational evaluation and the second sub chapter includes the translational evaluation of poetic translation and it’s meaning and nature and while doing this an effort has been made to figure out how evaluation of poetic translation has been done and what are the bases included in this type of translation. Though this chapter has its own importance because it helped in understanding the nature of poetic translation. And evaluation of translated text has been presented in second chapter on the basis of this same chapter. And after it introduction of poet, translator and poetic text has been included in the second chapter because it is necessary and important to give their details for giving right evaluation of the text. The first sub chapter of second chapter include the introduction of poet Dr.ShridharPawar and translator Gopal Naidu and the second sub chapter presents the content matter of the creation ‘AadhaAsman Sir Par’ and we reached on the conclusion that the basic or main subject of the creation is ‘Kamathipura’. Problems of the prostitutes living in red light area

of‘Kamathipura’. Caneasily be realized in this creation. In the creation ‘AadhaAasma Sir Par’, poet and translator indicated that half sky (aadhaasman) in which prostitutes of ‘kamathipura’ spend their life and the half sky which do really exists for them is the sky of ‘kamathipura’ which its own pain, agony and struggle and which is presented the translation evaluation of ‘Aadhaaasma sir par’ which is devided into two sub-chapters. The first one is titled as ‘evaluation of translated creation on the level of word, sentence and meaning’ in which we have tried to represent the evaluation of the titles of poems in aadhaasman sir par, translated in hindi on the level of word, sentence and meaning. Conclusion of this chapter has been presented after that and conclusions found during the research has been presented in the end. In the translational evaluation of first poem we have found that the translator has tried to use the same words in his translation at many places like the way they are in source text. If we investigate first poem on this fact then we come to know that translator has kept the following facts in his mind while translating.

1. Translator has failed in bringing the male dominancy which is indicated in the source text like the translator said that completeness comprised in the penis centric entity. In this way the sense of source line indicated towards the dissolving or melting of penis centric entity in few moments whereas the translator Gopal Naidu translated it in the sense that completeness get comprised in the penis centric entity. Melting of entity is first process and getting comprised in completeness is second one. In this way the source indicates towards the first process but the translation indicates toward the second process.

In this way if we lay down our vision on the translational evaluation of all the poems then following conclusions comes out on the basis of evaluation of readingful and impactful translations.

1. If we saw the title of the poetic text of shridharpawar that is aadhaasman sir par than we came to know that poet indicated towards that half sky under which prosititues of ‘kamathipura’ lives in. Generally half of the population word is commonly used for the womens. On the very basis Pawar has indicated towards the red light area ‘kamathipura’, through his title Aadhaasman sir par. And the translator too used it as it is.

2. Translator has changed some of the titles of the poems according to its inner content in which if he has used some of the titles as they are given in the source text then they may be sounded more accurate.

3. We have seen in the second chapter that translator has taken too much freedom in the translation of some of the poems because of which poems lost their source impact. But not all of the part only first, second or third part are affected with it. So we can say that leaving out some of the poems rest of the poems do not have source sense. Only some sense of source can be seen in it.

In this way we can say that in this translational evaluation we made an effort that the evaluation of the creation Aadhaasman sir par must be done on the basis on which any translated creation gets evaluated. For this we have presented the translational evaluation of poems on the levels of word, meaning and titles by making readingfull and impactful evaluation of translation as it's base.

शोध सार

प्रस्तुत शोध में हमने यह मराठी से हिंदी में अनुदित काव्यकृति 'आधा आसमां सिर पर' अनुवाद परक मूल्यांकन'करने का प्रयास किया है। हालांकि किसी भी अनूदित कृति का अनुवाद मूल्यांकन करना बेहद कठिन काम है। फिर भी प्रस्तुत शोध में हमने अनुवाद मूल्यांकन करने का प्र यास किया है। मूल्यांकन इसलिए कठिन है क्योंकि रचनाकार,अनुवादक और मूल्यांकनकर्ता तीनों अलग-अलग वैचारिक धरातलों पर अपना-अपना काम करते हैं और तीनों एक ही रचना से जुड़े होते हैं इसलिए अनुवादक और मूल्यांकनकर्ता दोनों का आग्रह मूल के प्रति रहता है। ऐसे में इस शोध के उपसंहार में हम उन बिन्दुओं को रेखांकित करेंगे जिन्हें हमने इस शोध के दौरान में तलाशने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध तीन अध्यायों में बंटा हुआ है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत हमने निम्नलिखित सामग्री को प्रस्तुत किया है।

अनुवाद मूल्यांकन अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप

1.1. अनुवाद मूल्यांकन अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप

1.2.काव्य का अनुवाद मूल्यांकन अर्थ एवं स्वरूप

जिसमें हमने अनुवाद मूल्यांकन क्या है? उसका स्वरूप कैसा है? यह तलाशने का प्रयास किया है। किसी भी अनूदित कृति का अनुवाद मूल्यांकन करने के लिए मूल्यांकन के स्व रूप को जानना जरूरी होता है इसलिए हमने इस अध्याय को इस अध्याय को दो उपअध्याओं में बांटा गया है। प्रथम उप अध्याय में हमने अनुवाद मूल्यांकन अर्थ,परिभाषा और स्वरूप को प्रस्तुत किया है। दुसरे उपअध्याय में हमने काव्य का अनुवाद मूल्यांकन अर्थ और स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए यह देखने का प्रयास किया है कि काव्य का अनुवादक मूल्यांकन किस तरह से किया जाता है। उस मूल्यांकन में किन आधारों को प्रमुखता से शामिल किया जाता है। अत: यह अध्याय भूमिका के लिए आवश्यक अध्याय था जिससे हमने काव्य अनुवाद के स्वरूप को विशेषत: समझने का प्रयास किया। और इसी के आधार पर द्वितीय अध्याय में अनूदित कृति का मूल्यांकन प्रस्तुत किया।अत: इसके बाद द्वितीय अध्याय के अंतर्गत हमने कवि,अनुवादक और काव्यकृति का परिचय आदि विषय वस्तु को रखा है क्योंकि कवि और अनुवादक का परिचय और काव्यकृति का परिचय किसी भी अनूदित कृति के मूल्यांकन के लिए आवश्यक होते हैं। अत: इसके अंतर्गत हमने पहले उप-अध्याय में कवि डॉ. श्रीधर पंवार और अनुवादक गोपाल नायडू के परिचय को शामिल किया है दुसरे उपअध्याय में हमने 'आधा आसमां सिर पर' कृति की विषय वस्तु को प्रस्तुत किया है और इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि 'आधा आसमां सिर पर' कृति की मूल विषय वस्तु कमाठीपुरा है। कमाठीपुरा के रेड एरिया में रहने वाली वेश्याएं,उनके सुख-दुःख,जीवन संघर्ष,उनकी बीमारियाँऔर रोजमर्रा की अन्य समस्याएं इस कृति में दिखाई देती हैं 'आधा आसमां सिर पर' का अर्थ कवि और अनुवादक ने उस आधे आसमां की तरफ संकेत किया है जिसमें कमाठीपुरा की वेश्याएं अपने हिस्से के आधे आसमां से जुडी हुई हैं जिसमें दुसरे हिस्से का

आसमां नहीं है। यहाँ सुख समृद्धि है वह आसमां उनके हिस्से में नहीं आ पाता। उनके हिस्से में जो आसमां है वह कमाठीपुरा का आसमां हैं जिसके अपने दुःख दर्द हैं संघर्ष हैं। जिसे अनुवादक और कवि दोनों ने प्रस्तुत किया है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत हमने 'आधा आसमां सिर पर का अनुवाद मूल्यांकन' प्रस्तुत किया है।जिसे दो उपअध्याओं में बांटा गया है। पहला उपअध्याय है 'शब्द ,वाक्य और अर्थ के स्तर पर अनूदित कृति का मूल्यांकन' जिसके अंतर्गत हमने आधा आसमां कृति की कविताओं के हिंदी अनुवाद का शीर्षक के स्तर पर शब्द,वाक्य और अर्थ के स्तर पर मूल्यांकन प्रस्तुत किया है।इसके पश्चात इस अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। और अंत में आधाआसमां सर पर'अनुवाद परक मूल्यांकन: निष्कर्ष के अंतर्गत शोध के दौरान प्राप्त कियें गए निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। पहली कविता के अनुवाद का पाठधर्मी अनुवाद मूल्यांकन के निष्कर्ष के रूप में हम देखते हैं कि पाठ में जो शब्द हैं उन्हें अनुवादक ने कहीं-कहीं मूल की तरह ज्यों का त्यों लेने का प्रयास किया है। इस कसौटी पर यदि हम सबसे पहली कविता को जांचे तो पहली कविता में अनुवादक ने पाठधर्मी अनुवाद के स्तर पर निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखा है 1.मूल में जिस पुरुष सत्ता की तरफ संकेत है उसे अनुवादक पहली कविता के पाठ में नहीं ला पाया है जैसे अनुवादक कहता है कि पूर्णत: समाविष्ट हो जाती है शिशन केंद्रीय सत्ता में इस तरह मूल पंक्ति का जो अर्थ है क्षण भर में शिशन केन्द्रित सत्ता का पिघलने की तरफ संकेत है जबकि गोपाल नायडू ने इसका अनुवाद पूर्णता का शिशन केन्द्रित सत्ता में समाविष्ट होना किया है। सत्ता का पिघलना पहली प्रक्रिया है पिघलकर पूर्णता में समाविष्ट हो जाना, दूसरी इस तरह देखा जाए मूल में पहली प्रक्रिया की तरफ संकेत है जबकि अनुवाद में दूसरी प्रक्रिया की तरफ संकेत है एक अन्य पंक्ति में मूल कविता में विरेचन का संदर्भ पुरुष अहंकार का रहस्यमयी विरेचन : विरेचन कैथार्सिस को कहते हैं। रिलीस,रिलीफ अरस्तु ने विरेचन के बारे में कहा था कि सफल त्रासदी विरेचन द्वारा करुणा और त्रास के भावों को उद्भूत करती है। कवि ने यहाँ विरेचन का अर्थ वीर्य स्खलन के लिए लिया है। जबकि अनुवादक गोपाल नायडू इस भाव को अभिव्यक्त करने से बचने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। इस पहली कविता का यह केन्द्रीय भाव था। जिसे अनूदित पाठ में अनुवादक नहीं ला पाया है इसका कारण है कि इस तरह का खुलापन कविता में कम ही अभिव्यक्त किया जाता है परंतु डॉ. श्रीधर पवार ने इन्हें प्रयुक्त किया है जबकि अनुवादक ने इस से बचने का सफल प्रयास किया है जिससे पहली कविता का प्रभाव पाठक पर उस रूप में नहीं पड़ा जिस रूप में मूल का प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार यदि पूरी कविताओं के अनुवाद मूल्यांकन पर दृष्टी डालें तो पाठधर्मी और प्रभाव धर्मी अनुवाद मूल्यांकन के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकलते हैं।

1. श्रीधर पवार की काव्य पुस्तक के शीर्षक को देखा जाए तो आधा आसमां सर पर शीर्षक से कवि ने उस आधे आसमां की तरफ संकेत किया है। जो कमाठीपुरा की वेश्याओं के सर पर है। वैसे स्त्रियों के लिए आधी आबादी शब्द प्रयोग किया जाता है। इसी तर्ज पर आधा आसमां सिर पर शीर्षक से पंवार ने कमाठीपुरा की तरफ संकेत किया है अनुवादक ने भी उसी को यथारूप प्रस्तुत कर दिया है।

2. कविताओं के अनुवाद में अनुवादक ने कुछ शीर्षकों में बदलाव किया है जो भीतरी विषय वस्तु के अनुसा र हैं जिनमें कुछेक शीर्षकों को यदि अनुवादक मूल की तरह अनुवाद में भी प्रस्तुत करता तो अनुवाद मूल के अधिक निकट होता।

3. दुसरे अध्याय में हमने देखा कि अनुवादक ने कुछ कविताओं के अनुवाद में मूल कविता से भिन्न अनुवाद कर दिया है जिससे कविता मूल निरपेक्ष दिखाई देती है लेकिन पूरी कविता नहीं। कविता का केवल पहला हिस्सा अथवा दूसरा या तीसरा हिस्सा ही। इससे हम कह सकते हैं कि कुछ कविताओं कोशेष छोड़कर कविताओं के कुछ हिस्से मूल निरपेक्ष हैं। उनमें मूल का कुछ अंश ही आया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस अनुवाद मूल्यांकन में हमने यथासंभव यह प्रयास किया है कि आधा आसमां सिर पर कृति के अनुवाद का मूल्यांकन उस आधार पर किया जा सके जिस आधार पर किसी भी अनूदित कृति का अनुवाद मूल्यांकन किया जाता है| इसके लिए हमने पाठधर्मी और प्रभावधर्मी अनुवाद मूल्यांकन को आधार बनाते हुए कविताओं में शब्द के स्तर पर अर्थ के स्तर पर और शीर्षक के आधार पर अनुवाद मुल्यांकन प्रस्तुत किया है|